International Journal of Home Science 2018; 4(2): 42-44

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2018; 4(2): 42-44
© 2018 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 12-03-2018
Accepted: 16-04-2018

डॉ. राखी कुमारी
गृह-विज्ञान, आर०एन०पी० कॉलेज
पंडौल, मधुबनी, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ. राखी कुमारी
गृह-विज्ञान, आर०एन०पी० कॉलेज
पंडौल, मधुबनी, बिहार, भारत।

भारतीय महिलाओं में परिधान के बदलते परिदृश्य: एक विश्लेषण

डॉ. राखी कुमारी

सारांश

हजारों साल पहले पुरानी संस्कृति में महिलाएँ शरीर के ऊपरी हिस्से में कपड़े नहीं पहनती थी| बाद में महिलाएँ एक लंबे वस्त्र से शरीर को ढ़कना शुरू की जिसे वो धोती का नाम देती थी जिसने समय के साथ साड़ी का रूप ले लिया| लेकिन तब भी ब्लाउज का चलन नहीं था| सबसे पहले बंगाली महिलाओं ने ब्लाउज-पेटीकोट का चलन शुरू किया| धीरे-धीरे बाद में वें अपने पहनने-ओढ़ने में बदलाव कर इस तरह पोशाक को पहनना शुरू कि जिससे उनके शरीर का कोई हिस्सा दिखाई न दे|

पुरानी संस्कृति से मेरा तात्पर्य है प्राचीन काल, प्राचीन काल से मध्यकाल में आते-आते महिलाएँ सभ्यता की सीढ़ी चढ़ कर अपने शरीर को पूरी तरह ढ़क ली किन्तु मध्यकाल से आधुनिक काल में कदम रखते-रखते फिर से प्राचीन काल के समान अपने शरीर को रखना प्रारंभ कर दी है|

कूट शब्द– प्राचीन काल, मध्यकाल, आधुनिक काल, सभ्यता, संस्कृति, महिलाएँ|

प्रस्तावना

भारतीय कला परम्परा इस तथ्य की साक्षी है की परिधान व अलंकरण प्रत्येक काल में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं| हमारे प्राचीन वांग्मय में जहाँ, एक और शारीरिक सौष्ठव के संबंधमें विस्तार से विचार किया गया है, वहीं दूसरी ओर वस्त्रों की विविधता पर भी विशेष ध्यान दिया गया है| वस्त्रों की प्रकृति का निर्धारण किसी भी देश व अंचलो के भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिपेक्षय में होता है| जहाँ तक भारतीय वस्त्रों का संबंध है इनमे व्यापक विविधता दिखाई देती है क्योंकि भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा व दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है, जो उतरी गोलार्ध के लगभग 33 हज़ार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है| इस देश के शीर्ष पर यदि हिमालय है तो मध्य में रेगिस्तान और नीचे की ओर सागर है| इन सब के कारण यहाँ की जलवायु विविधतापूर्ण है और इसी कारण यहाँ वस्त्रों की प्रकृति में विविधता है|

सभ्यता और संस्कृति के कारण तो वस्त्रों की प्रकृति निर्धारित होती ही है, वस्त्रों की प्रकृति को निर्धारित करने में मनोवैज्ञानिक तथा आर्थिक पक्ष भी जिम्मेदार है|

वस्त्र की बात करे, वस्त्र का अंग्रेजी textile होगा जो लैटिन भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ होता है- 'रेशे से कपड़े तक'| वस्त्रों की प्रकृति की बात करें तो वस्त्र की प्रकृति वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, मनोवैज्ञानिक तथा आर्थिक कारणों के परिपेक्ष्य में निर्धारित की जाती है| प्राचीन काल में लोग वस्त्र को नहीं जानते थे एवं वे अपने शरीर को बिना ढ़के ही भ्रमण कर अपना जीवन बिताते थे| बाद में वे पेड़ की छाल से अथवा जानवरों की खाल से अपने अंगो को ढ़कने लगे| उनमें लज्जा का विकास हुआ उन्हें शर्म हुई तब कपड़ों का उद्गम हुआ|

कपड़ों के उद्गम के सिद्धांत:–

1. लज्जाशील (Modesty)
2. अलज्जाशील/लज्जाहीन (Immodesty)
3. सुरक्षात्मक (Protective)
4. सजावटी सिद्धांत (Decorative)

फिर महिलाएँ लोगो को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए क्षीण वस्त्रों को पहनने लगी तब अलज्जाशील यानि Immodestry सिद्धांत का विकास हुआ|

फिर सुरक्षा की दृष्टि से अपने शरीर को बारिश, धुप आदि से बचाने तथा जंगली जानवरों से अपनी रक्षा हेतु रक्षात्मक वस्त्र पहना गया, तब Protective यानि सुरक्षात्मक सिद्धांत का आविर्भाव हुआ| अंत में महिलाएं सजने हेतु वस्त्र पहनना शुरू की, तब सजावटी अर्थात Decorative सिद्धांत का उद्गम हुआ| आज के आधुनिक काल में महिला हो या पुरुष सजावटी सिद्धांत पर ही बल देते है, खासकर महिलाएँ सजने के प्रति विशेष जागरूकता दिखाती है|

किसी शादी-विवाह, पूजा-पाठ, छट्ठी, मुंडन संस्कार, अन्नप्रासन, किटी पार्टी में वे अपने अंग-प्रदर्शन होने वाले वस्त्र पहनने से नहीं चुकती|

इस प्रकार अगर Fashion की बात करे तो fashion की तीन theory हैं:

Fashion Theory:-

1. Trickle Down/Downward Theory

2. Trickle Across Theory

Elite = Poor

3. Trickle Up/Upward Theory

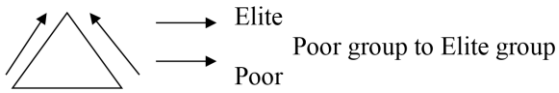

वस्त्र विज्ञान में एक theory और काम करती है, वे हैं:-

Evert Roger's Diffusion of Innovation/Adoption Theory(नवोंन्मेषक-सिद्धांत)

इस सिद्धांत में:

		प्रतिशत में
1. Innovative–	Design बनाने वाले	2.5%
2. Early Adoption–	शीघ्र अनुकूलन करने वाले	13.5%
3. Early Majority–	शुरुआती बहुमत वाले	34%
4. Late Majority–	विलम्ब बहुमत वाले	34%
5. Laggards–	सबसे अंत में अपनाने वाले	16%

शोध उद्देश्य:

इस शोध को लिखने का उद्देश्य बड़ा ही सुलझा हुआ है| भारतीय महिलायें अपने यहाँ के पारम्परिक वस्त्रों को धारण कर अपना मान-सम्मान तथा अपनी सभ्यता संस्कृति का गौरव बढ़ा अपने यहाँ कि ही नहीं वरण दूसरे देशों में भी सम्मान की दृष्टि से देखी जा सकती है किन्तु महिलाएं पाश्चात्य संस्कृति से ज्यादा ही प्रभावित हो रही हैं जिस कारण अपनी छवि को धुमिल करती जा रही है|

कहावत है, "कुछ लोहा दोष और कुछ लोहार दोष"; एक सर्वे के अनुसार 79 फीसदी लोग मानते हैं कि कम और भड़कीले पहनावे की वजह से बलात्कार की घटनाओं में अप्रत्याशित वृधि हुई है| कपड़ों के इस खुलेपन से सबसे ज्यादा नौजवान प्रभावित हैं तथा 41 प्रतिशत लोग परम्परागत पहनावे के पक्ष में नज़र आए हैं| जबकि कुछेक मनोवैज्ञानिक, मनोविदों व मनोचिकित्सकों की राय में 'टाइट-कपड़े' निःसंदेह व्यक्ति की सुशुप्त 'काम-वासना' को जगाते हैं; जबकि साड़ी और सलवार-कुर्ती में ऐसा प्रतीत नहीं होता है या उनकी ओर कमतर ही ध्यान जाता है, जबकि टाइट कपडे पहनी लड़की व महिला को लोग गिद्ध-दृष्टि से देखते हैं| Fashion-cycle की बात लें तो कोई सा वस्त्र Fashion में आता है; पहले वह प्रचलित होता है फिर लोग उसे पसंद करते हैं फिर वह स्वीकृत होता है तथा बाद में वह नकारा जाता है और ऐसे ही वह फैशन से बाहर हो जाता है|

Faishon-Cycle

1. Introduction (परिचय)
2. Rising (उदय/बढ़ना)
3. Acceptance (स्वीकृति)
4. Decline (नकारना)
5. End of Fashion (फैशन से बाहर)

Faishon-cycle

जब कि भारतीय साड़ी की गरिमा का जितना बखान किया जाय उतना ही कम है| साड़ी भारतीय नारी का वस्त्र ही नहीं, उसकी अस्मिता की भी पहचान है| इसमें भारतीय महिलाओं का जो सौम्य व शालीन व्यक्तित्व झलकता है, वह सभी के मन को लुभाता है और तो और यह कभी भी फैशन से बाहर नहीं हो सकता; कल भी था, आज भी है और आने वाला कल में भी यह पूर्ण मर्यादित रहेगा|

शोध विश्लेषण:

परिधान में झलकता व्याक्तितित्व, आज से कई शताब्दी पूर्व मानव ने जब दुनिया में पदार्पण किया उस समय से उसे अपने तन ढकने की आवश्यकता प्रतीत हुई| गुजरते वक्त के साथ सभ्यता का विकास होता गया और मानव वस्त्र की उपयोगिता को जान गया| कला और संस्कृति के विकास के साथ ही व्यक्ति ने साधारण की अपेक्षा कलात्मक वस्त्र पहनने सीखे| यह उक्ति सत्य ही है कि "वस्त्र व्यक्ति को बनाते हैं|" निःसंदेह परिधान से व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रभावित होता है| व्यक्ति के पहनावे से ही उसके संस्कार एवं संस्कृति तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का पता सहज ही लगाया जा सकता है| वस्त्रों द्वारा ही व्यक्ति की अभिरुचि परिलक्षित होती है| वस्त्रों का मन पर भी गहन प्रभाव पड़ता है| भावाभिव्यक्ति के लिए परिधान सर्वश्रेष्ठ साधन माना जाता है| परिधान के द्वारा ही व्यक्ति को समाज में वरीयता प्राप्त होती है| आज के युग परिवेश में भोजन की तरह वस्त्र भी मानव के लिए बहुत आवश्यक वस्तु है परन्तु प्रायः यह बात देखने में आती है कि जिन्हें अपनी रूचि के परिधान उपलब्ध नहीं हो पाते हैं उनमें हीन भावना आ जाती है| हमारी सामाजिक और आर्थिक स्थिति का पता लोग वस्त्र से आकलन करते हैं| आज के सामाजिक परिवेश में व्यक्ति के लिए "उपयुक्त"(SUITABLE) वस्त्रों का चुनाव सबसे कठिन समस्या है| अभिरुचियों के अनुरूप वस्त्रों का उचित चुनाव करके ही व्यक्तित्व को निखारा जा सकता है; अतः वस्त्रों के चयन के सम्बन्ध में उसके कई पहलुओं पर जाँच-परख करना चाहिए|

वस्त्र ऐसे हों जो व्यक्ति की कार्य कुशलता कि परिचायक हों तथा वस्त्रों पर पाश्चात्य संस्कृति का रंग चढ़े, किन्तु इस कदर नहीं कि अपने यहाँ की संस्कृति धुमिल हो जाए| परिधान ऐसा हो जो आपके जीवन शैली से मेल खाती हो; एक सही परिधान आपको गरिमा,प्रतिष्ठा,गौरव तथा शोभा भी प्रदान करता है| शेक्सपियर ने "The apparel often proclaims the man" कह कर परिधान के महत्व व व्यक्ति की अभिरुचि को दर्शाया है|

निष्कर्ष:

अंततः यह कहना सही होगा कि महिलाओं को परिधान धारण करते वक्त यह ध्यान रखना होगा कि वह परिधान उनके व्यक्तित्व में झलकता निखार तथा सुन्दरता तो परिलक्षित करे ही साथ ही उनके सभ्यता,संस्कृति की गरिमा को भी बनाये रखे| देखा जाये तो सामाजिक परिवेश में भारतीय परम्परागत परिधानों को ही वरीयता प्राप्त है| मूल रूप से इन्ही परिधानों में हमारे भारतीय समाज का गौरव एवं आकर्षण छिपा है|एक भारतीय नारी जितनी सुन्दर एवं लुभावनी परंपरागत (साड़ी, लहंगा, चुनरी तथा सलवार-कुर्ती इत्यादि) परिधानों में लगती है उतनी अन्य किसी वस्त्रों में नहीं| भारतीय परिधान खासकर महिलाओं के द्वारा पहनी गई साड़ी विदेशों में भी महिलाएं अपनाती नज़र आती हैं और दूसरी ओर हमारे यहाँ की महिलाएं Western-Culture-Dress-Pattern से प्रभावित होती जा रही हैं|

सन्दर्भ- सूचि:

1. महिलाओं के परिधान: alivenews.co.in
2. भारतीय परम्परा में परिधान:the core page, “The Core”-National
3. महिलाओं के पहनावे: Hindi.webduniya.com
4. Magazine: “SAVVY”
5. Magazine: “Vogue India”
6. Magazine: “Harper’s Bazar”